>

Title**:** Need to include Bundelkhandi language in the Eighth Schedule to the Constitution.

श्री राजनारायन बुधौलिया (हमीरपुर, उ0प्र0) : अध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के लगभग 26 जिलों में बुंदेलखंडीय भाषा बोली जाती है। बुंदेलखंड क्षेत्र चम्बल, यमुना, बेतवा, धसान, केन पांच नदियों से घिरा हुआ है। देश की आजादी में झाँसी की रानी एवं पंडित परमानन्द, दीवान शत्रुघन सिंह, स्वामी ब्रहमानन्द एवं हजारों लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं विश्व के कोने कोने में इस भाषा को जानने वाले लोग रहते हैं। यह भाषा ब्रज भाषा से मिलती जुलती है। जिस कारण यह भाषा देश के सभी क्षेत्रों में बोली जाती है। वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के चरित्र एवं वीर योद्धा आल्हा-उदल के चर्वित आल्हा काव्य में इसका बखूबी वर्णन है। इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है कि -

बुन्देले हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

आल्हा-उदल बड़े लड़ैया जिनसे हार गयी तलवार, आदि आदि।

एक के मारे दो मर जावें, तीसरा देख देख मर जाए।

बुंदेलखंडी फड़ साहित्य विÂषय में स्वर्गीय डॉ0 गनेशीलाल बुधौलिया ने शोध भी किया है जिसे बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के पाठयक्रम में शामिल किया गया है। राÂष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्ता, डॉ0 वृंदावन लाल वर्मा की बुंदेलखंडी भाषा में अनेकों किताबें प्रसिद्धि प्राप्त हैं। उदाहरणार्थ - बुंदेलखंड का आल्हा काव्य आज भी भारत के कोने कोने में गाया जाता है। बुदेलखंड की वीरभूमि में आल्हा, उदल जैसे लोगों ने जन्म लिया है। यह भाषा उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के अधिकांश क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

अतः सदन के माध्यम से अनुरोध है कि बुंदेलखंडी भाषा को क्षेत्रीय भाषा का दर्जा प्रदान कर संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाये।